7

अन्यजातियां, विवेक और मिशन कार्य

(2:14, 15)

अध्याय 1 के अपने अध्ययन में हमने अन्यजातियों के विरुद्ध पौलुस का मुकदमा देखा जिसमें उसने यह साबित किया कि वे पापी थे, जिन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता थी (आयतें 18-32)। अध्याय 2 में प्रेरित ने दिखाया कि यहूदी भी दोषी थे और उनके पास कोई बहाना नहीं था (आयत 1; देखें आयत 17क)। परन्तु अपना ध्यान यहूदियों की ओर लगाने से पहले हम एक और पाठ में सीखेंगे कि पौलुस ने अन्यजातियों के बारे में क्या कहा।[1] यह अध्ययन संक्षिप्त वचन अर्थात 2:14, 15 पर आधारित है।

बेशक अध्याय 2 मुख्यतया यहूदियों की आत्मिक कमियों के बारे में है, परन्तु बीच-बीच में पौलुस ने गैर यहूदियों की भी बात की है। उदाहरण के लिए आयत 9 कहती है ''और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है, आएगा, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर।'' ''यूनानी'' बराबर ''गैर यहूदी'' है, जो कि बदले में ''अन्यजाति'' के बराबर ही है।

फिर, पौलुस ने कहा, ''इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, ...'' (2:12)। ''जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया'' वे अन्यजाति थे, जिनके पास मूसा की व्यवस्था नहीं थी। पौलुस ने कहा कि ''वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे।'' कोई विरोध कर सकता है कि ऐसा न्यायसंगत नहीं होगा: ''यदि किसी के पास व्यवस्था ही नहीं है तो वह नाश क्यों हो?'' पौलुस का उत्तर यह होगा कि अन्यजातियों के पास व्यवस्था *थी*। उनके पास चाहे मूसा की व्यवस्था नहीं थी, पर उनके पास व्यवस्था थी:

> फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं (आयतें 14, 15)।

एक लेखक ने कहा है, ''अन्यजाति वास्तव में व्यवस्था के दायरे से बाहर नहीं हैं, चाहे वह मूसा की व्यवस्था के दायरे से बाहर अवश्य हैं।''[2]

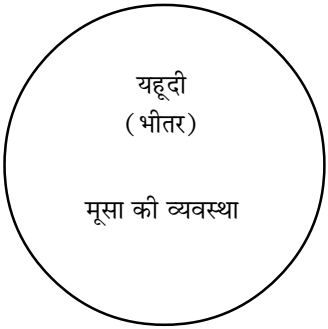

अन्यजाति
(बाहर)

''उनके पास व्यवस्था नहीं''-
मूसा की व्यवस्था से बाहर
(परन्तु उनके पास और व्यवस्थाएं हैं)

कई बार अनुवादक यह संकेत देने के लिए कि आयतें विचार की मुख्य पंक्ति से नीचे को आती हैं, 14 और 15 आयतों को कोष्ठकों में रखते हैं (NIV; KJV; NKJV; ASV; NCV)। (यदि इन दो आयतों को निकाल दिया जाए तो भी वचन को आसानी से पढ़ा जाएगा।) 2:14, 15 को राह से भटकते हुए माना जाए या न,[3] इस वचन का अध्ययन इसी पर हो सकता है।

मैंने इस पाठ को ''अन्यजातियां, विवेक और मिशन कार्य'' नाम दिया है। हम पहले वचन पाठ की समीक्षा करके अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध पर विचार करेंगे। फिर हम विवेक पर चर्चा करेंगे। स्टीवन बरबास ने कहा है कि ''विवेक के स्वभाव पर नये नियम का सबसे चमकदार भाग रोमियों 2:14, 15 है।''[4] (रोमियों की पुस्तक का अध्ययन करने की एक चुनौती लगभग हर आयत में कई बार अतिरिक्त विचार के रूप में महत्वपूर्ण धर्म शास्त्रीय शिक्षा है।) अन्त में हम इस प्रश्न पर विचार करेंगे कि 14 और 15 आयतें संसार में सुसमाचार सुनाने की यीशु की आज्ञा के हमारे उत्तर को प्रभावित करती होनी चाहिए या नहीं।

अन्यजातियों के पास एक व्यवस्था थी

''स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं''

आइए, वचन पाठ की समीक्षा के साथ आरम्भ करते हैं। पौलुस ने आरम्भ किया ''फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं,[5] स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, ...'' (आयत 14क)। अध्याय 1 में इस प्रेरित ने अन्यजाति संसार की एक धुंधली सी तस्वीर बनाई थी। इसके साथ ही, उसे और दूसरों को यह स्पष्ट हो गया होगा कि ''इस नियम के अपवाद'' थे। हर अन्यजाति व्यक्ति लैंगिक अनैतिकता (1:24-27) या सकल अधर्म (आयतें 28-32) का दोषी नहीं था। इस कारण पौलुस ने कहा कि कई ''अन्यजाति लोग जिनके पास [मूसा की] व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से [मूसा की] व्यवस्था की बातों पर चलते हैं।''

इस प्रेरित ने यह नहीं कहा कि इस प्रश्न में दिए गए अन्यजाति लोगों ने मूसा की व्यवस्था को माना था; वे इसे नहीं मान सकते थे, क्योंकि उनके पास यह व्यवस्था नहीं थी तौ भी वे व्यवस्था की *''बातों ''*को मानते थे। यानी वे मूसा की व्यवस्था द्वारा निर्देशित उन्हीं नियमों को मानते हुए *वैसी* ही ''बातों'' को मान रहे थे। उदाहरण के लिए पांचवीं आज्ञा है, ''तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'' (निर्गमन 20:12क) और कई अन्यजाति लोग अपने माता-

पिता का आदर करते थे। छठी आज्ञा है, ''हत्या न करना'' (आयत 13) और उनमें से कइयों का मानना था कि हत्या करना गलत है। सातवीं आज्ञा है, ''व्यभिचार न करना'' (आयत 14), और उनमें से कई अपने जीवनसाथी के साथ वफादार रहते थे। आठवीं आज्ञा है, ''चोरी न करना'' (आयत 15), और अधिकतर लोग चोरी को अपराध मानते थे।

यदि अन्यजातियों के पास दस आज्ञाएं नहीं थीं तो उन्हें इन नियमों का पालन करने की बात कैसे पता चली। पौलुस ने कहा कि ''स्वभाव ही से'' यह उनके पास थी। अनुवादित शब्द ''स्वभाव ही से'' (*phusei*) का अर्थ ''स्वाभाविक ही'' (''प्रकृति'' के लिए शब्द *phusis* से) है। हम में से कई लोग इस वाक्यांश का इस्तेमाल इस प्रकार करेंगे कि उन्होंने व्यवस्था की शर्तों को ''स्वाभाविक'' ही मान लिया (CJB)। थेयर की लेक्सिकन के अनुसार रोमियों 2:14 में *phusei* का अर्थ है कि अन्यजाति लोग ''सही और उचित की अपनी प्राकृतिक समझ से चलते'' थे।[6]

1:26, 27 में इस्तेमाल किए गए ''स्वभाव'' और ''स्वाभाविक'' शब्दों पर चर्चा करते हुए हमने देखा कि दो लेखकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि ''स्वभाव'' का संकेत ''परमेश्वर के बनाए गए क्रम'' में है। अन्यजाति लोग ''प्राकृतिक रूप से'' जानते थे कि कुछ बातें सही हैं और दूसरी गलत, क्योंकि *परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा ही बनाया है*।

''व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं''

अन्यजातियों की बात करने के बाद जो ''स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते'' थे (2:14), पौलुस ने कहा, ''व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं'' (आयत 14)। हम उन कुछ लोगों की बात करते हैं, जो ''अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं'' यानी वे मनुष्य या परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं मानते, बल्कि अपने मन की बातों पर ही चलते हैं। पौलुस के दिमाग में ऐसे लोग नहीं थे, यह कहने के बाद कि वे ''अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं'' उसने समझाया कि ऐसा *क्यों* था: ''वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं'' (आयत 15)।[7] यह प्रेरित परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने वालों की बात नहीं कर रहा था, बल्कि उनकी बात कर रहा था, जिन्होंने अपने जीवनों से दिखाया था कि ''व्यवस्था की बातें'' उनके ''हृदयों में लिखी हुई'' हैं।

''व्यवस्था की बातें'' (आयत 15क) का अर्थ मूलत: ''व्यवस्था'' ही है। जो कुछ अन्यजातियों के ''हृदयों में लिखा हुआ'' था, वह व्यवस्था नहीं, बल्कि ''व्यवस्था की *बात*'' थी यानी मूसा की व्यवस्था द्वारा बताया गया ''काम'' था। NIV में ''The requirements of the law are written on their hearts'' है।

''Hearts'' (*kardia*) का सांकेतिक इस्तेमाल (जैसे बाइबल में कई बार किया गया है) भीतरी अर्थात ''भावना, मनोवेग, लगाव, इच्छा'' और कई बार ''बुद्धि के स्थान'' के संकेत के लिए किया जाता है।[8] ''Written'' (''लिखना'' के अर्थ वाले *grapho* से *graptos*) का इस्तेमाल भी सांकेतिक अर्थ में किया गया है, जैसे हम कहते हैं, ''पराजय उसके माथे पर लिखी हुई थी।'' यहां इसका अर्थ यह है कि कुछ नैतिक ज़िम्मेदारियां उनके मनों में निर्धारित थीं, जैसे वे किसी अदृश्य कलम से अंकित की गई हों।

यह कहते हुए कि व्यवस्था की शर्तें अन्यजातियों के हृदयों पर लिखी हुई थीं, पौलुस

सम्भवतया एक अन्तर कर रहा था कि यहूदी की व्यवस्था *बाहर* (पत्थर की पट्टियों पर; निर्गमन 24:12) जबकि अन्यजातियों की व्यवस्था *अन्दर* (उनके हृदयों पर) लिखी हुई थी।

अन्यजाति ''स्वाभाविक ही'' व्यवस्था में दी गई कई आज्ञाओं को मानकर ''अपने हृदयों में लिखी हुई'' दिखाते थे, चाहे उनके पास व्यवस्था थी नहीं। इस प्रकार वे (पौलुस के वाक्यांश का इस्तेमाल करें तो) ''अपने लिए आप ही व्यवस्था'' बन गए।

यह पुष्टि करते हुए कि अन्यजातियों के पास वास्तव में व्यवस्था थी, पौलुस ने हृदय, विवेक, और विचार तीन बातों का उल्लेख किया और सबको अलग-अलग काम दिया (आयत 15)। परन्तु हमें हृदय, विवेक और विचार करने की योग्यता को तीन अलग-अलग शक्तियां नहीं मानना चाहिए। तीनों ही परमेश्वर द्वारा दिए गए हमारे दिमाग का काम हैं। (हम उन्हें ''विवेक'' के काम मान सकते हैं।) हृदय, विवेक और विचार का नाम देने का पौलुस का उद्देश्य उन्हें अलग-अलग विभाग नहीं देना था, बल्कि वह उस अंदरूनी प्रक्रिया का वर्णन कर रहा था, जिससे सब विवेकी जीव जान सकते हैं कि कुछ काम सही हैं और कुछ गलत।

''उनके विवेक भी गवाही देते हैं''

यह घोषित करने के बाद कि ''व्यवस्था की बातें'' कुछ अन्यजातियों के ''हृदयों में लिखी हुई'' थीं, पौलुस ने आगे कहा कि ''उनके विवेक भी गवाही देते हैं'' (2:15)। अनुवादित शब्द ''विवेक'' का यूनानी शब्द *suneidesis* ''के साथ'' (*sun*) के लिए उपसर्ग और ''जानना'' (*oida*) के अर्थ वाले शब्द का मिश्रित रूप है। अंग्रेजी शब्द ''conscience'' लातीनी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ वही है: ''con'' (''के साथ'') जमा ''science'' (''ज्ञान'')। यूनानी में हो या अंग्रेजी में इस शब्द को ''[अपने आप][9] के साथ जानना'' के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह ''अंदरूनी जागरूकता'' है, परन्तु किस बात की अंदरूनी जागरूकता? पौलुस के समय में (और हमारे समय में) इसका इस्तेमाल सही और गलत के अंदरूनी ज्ञान से जुड़ा था। *Suneidesis* की परिभाषा देते हुए एक लेक्सिकन में ''नैतिक विवेक'' का शब्द इस्तेमाल किया गया है।[10]

प्रेंटिस मिएडर एक बार किसी नास्तिक मित्र के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था। उस मित्र द्वारा परमेश्वर में विश्वास न करने के कारण बताने पर, भाई मिएडर ने मेज़ के नीचे से उस व्यक्ति की टांग पर मारा। वह आदमी स्तब्ध लगा, परन्तु उसने यह मानकर कि यह काम अनजाने में हुआ है, अपनी बात पर वापस आ गया। एक पल में प्रचारक ने फिर उसे मारा। कई बार ऐसा होने के बाद वह आदमी रुक कर कहने लगा, ''तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!'' भाई मिएडर ने उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा, ''तुम्हें यह 'चाहिए' का विचार कहां से आया?'' इस कहानी के सम्बन्ध में उसने निष्कर्ष निकाला कि ''हर व्यक्ति में 'ought' और 'should' का बोध होता है।''[11]

हम विवेक पर बाद में विचार करेंगे। अभी मैं इस तथ्य को रेखांकित करना चाहता हूं कि जन्म लेने वाले हर व्यक्ति के अन्दर यह बोध होता है कि कुछ बातें ''सही'' हैं और कुछ बातें हैं जो ''गलत'' हैं। इस कारण व्यक्ति जो भी करता है, इस बारे में उस व्यक्ति का मन ''गवाही देता है'' कि वह काम सही है या गलत।

पौलुस ने उस भीतरी निरीक्षण के परिणाम को इस प्रकार व्यक्त किया: ''उनकी चिन्ताएं

परस्पर दोष लगाती या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं'' (आयत 15ग)। यदि किसी का विवेक यह निष्कर्ष निकालता है कि उसने गलत किया है, तो उसके विचार उसे दोषी ठहराएंगे (देखें 13:5)। हम उसे ''दोषी विवेक होना'' कहते हैं। यदि उस व्यक्ति का विवेक यह निर्णय लेता है कि उसने सही किया तो उसके विचार उसे निर्दोष ठहराएंगे (देखें 9:1)। हम इसे ''शुद्ध विवेक का होना'' कहते हैं।

आपने ध्यान दिया होगा कि रामियों 2:15 में ''व्यवस्था,'' ''गवाही देते,'' ''दोष लगाते,'' ''निर्दोष ठहराते'' जैसे कानूनी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है।[12] यह स्थिति न्यायालय जैसी है। NEB में आयत 15 का अन्तिम भाग इस प्रकार है: ''Their conscience is called as a witness, and their own thoughts argue the case on either side, against them or even for them.'' इस कचहरी में विवेक न्यायाधीश, गवाह और न्याय मण्डल के रूप में काम करते हुए तुरन्त न्याय देता है। फिर यह न्यायालय का दण्ड लागू करते हुए जल्लाद का काम करता है। एल्फ्रेड टेनीसन ने लिखा है:

> ... अपने सीने में न्याय की खामोश अदालत लिए
> स्वयं ही न्यायाधीश और न्यायमण्डली और स्वयं ही
> जेल का कैदी।[13]

पौलुस एक बार फिर मनुष्यजाति का विश्वव्यापी दोष सिद्ध कर रहा था। हर जगह रहने वाले लोगों में कुछ नैतिक मापदण्ड होता है, जिसके द्वारा वे चलते हैं। सी. एस. लुईस ने लिखा है कि ''संसारभर के मानवीय जीवों में यह जिज्ञासा भरा विचार है कि उन्हें एक विशेष प्रकार से व्यवहार करना चाहिए और वे इसमें से निकल नहीं पाते।''[14] कई बार लोगों का जीवन उस मानदण्ड के अनुसार होता है, परन्तु कई बार नहीं। जब उनका जीवन उस मानदण्ड के अनुसार नहीं होता तो वे अपने आप को दोषी पाते हैं। जिस कारण फिर वे उद्धार की अपनी आवश्यकता को मान लेते हैं।

संक्षेप में

सम्बन्धित विषयों पर आगे बढ़ने से पहले, सदियों से अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध के बारे में जो कुछ हमने सीखा है, उसे संक्षिप्त करते हैं और यह कि पौलुस ने यह ज़ोर क्यों दिया कि अन्यजातियों को यीशु के बलिदान की आवश्यकता थी। रोमियों 1 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर ने अन्यजाति जगत को बिना प्रकाशन के नहीं छोड़ा था। उस अध्याय का अध्ययन करते हुए हमने ध्यान दिया था कि परमेश्वर ने गैर-यहूदियों पर अपने आप को कई प्रकार से प्रकट किया था। उस प्रकाशन में, जिसे ''पुरखाओं की परम्परा'' माना जा सकता है, बलिदान देने की प्रथा सम्मिलित थी। परन्तु उन परम्पराओं का स्मरण कम होने के बावजूद अन्यजातियों के पास रचे गए संसार में परमेश्वर का प्रमाण था (1:18-20)। अब अध्याय 2 में पौलुस ने जोड़ा कि गैर-यहूदी लोग स्वाभाविक ही मूसा की व्यवस्था की कुछ नैतिक अवधारणाओं को मानते थे, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें विवेक दिया था। यहूदी व्यवस्था और अन्यजातियों द्वारा मानी जाने वाली व्यवस्था की तुलना और अन्त नीचे दिए गए चार्ट की तरह की जा सकती है।[15]

जे. डी. थॉमस ने ज़ोर दिया है कि ''परमेश्वर के सामने कोई मनुष्य व्यवस्था के बिना नहीं है!''[16] यदि यहूदी लोगों ने व्यवस्था को पूरी तरह माना होता तो उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं

होनी थी। यदि अन्यजातियों ने अपनी व्यवस्था का पूरी तरह पालन किया होता तो उनके लिए यीशु को क्रूस पर मरने की आवश्यकता नहीं होनी थी। रोमियों के आरम्भिक अध्यायों में पौलुस का तर्क यह है कि *कोई भी* परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए प्रकाश के स्तर तक नहीं जिया। इसलिए सब लोगों को चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति, परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता रही है!

हर किसी के पास विवेक है

क्या कोई ''विवेकरहित'' है?

रोमियों 2:14, 15 छोड़ने से पहले मैं विवेक पर कुछ टिप्पणियां करना चाहता हूं। टीकाकारों को विवेक को परिभाषित करने में कठिनाई आती है, परन्तु आम आदमी को यह परेशानी नहीं है। अधिकतर लोग यह कहेंगे, ''बेशक मुझे मालूम है कि विवेक क्या है! यह मेरे अन्दर कोई चीज़ है, जो मुझे गलत होने पर यह अहसास कराती है कि तुम गलत कर रहे हो!'' शायद, आपको पता हो कि मैं किस की बात कर रहा हूं।

मैंने पहले सुझाव दिया था कि ''जन्म लेने वाले हर व्यक्ति के अन्दर यह समझ होती है कि कुछ चीज़ें 'सही' हैं और कुछ 'गलत'।'' परन्तु हो सकता है कि आपको किसी ऐसे व्यक्ति का पता हो, जिसे विवेक की पीड़ाएं न लगी हों, अर्थात जो (जहां तक कोई भी बता सकता है) ''विवेकरहित'' है। एक जगह पौलुस ने लिखा है कि व्यक्ति का विवेक ''दागा'' गया हो सकता है (देखें 1 तीमुथियुस 4:2) जिससे वह काम करना बंद कर दे। किसी का विवेक बार-बार इसकी आवाज़ सुनने से मना करने के कारण और अन्त में उस आवाज़ को खामोश कर देने से दागा जा सकता है। रोमियों 14 और 15 अध्याय के अपने अध्ययन में हम देखेंगे कि व्यक्ति को अपने विवेक का उल्लंघन कभी नहीं करना चाहिए।[17] जब भी व्यक्ति अपने विवेक के विरुद्ध काम करता है, तो वह अपने विवेक के प्रभाव को कम करता है। ऐसा लगातार करने से वह परमेश्वर द्वारा दी गई सुरक्षा को नष्ट कर रहा है।

''अपने विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाएं''

विवेक के महत्व और इसका उल्लंघन न करने के महत्व पर पौलुस की शिक्षा के कारण कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि ''व्यक्ति को अपने विवेक के अनुसार ही जीना'' चाहिए। संसार के कई भागों में जिस दर्शन के बारे में सुना जाता है, वह यह है कि ''अपने विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाएं।'' हमें अपने विवेक को गलत तो नहीं कहना चाहिए, परन्तु हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि विवेक अपने आप में अचूक मार्गदर्शक है। जब पौलुस मसीही लोगों को सता रहा था तो वह शुद्ध विवेक से ही ऐसा कर रहा था (देखें प्रेरितों 23:1ख; 26:9)।

विवेक अकेला नैतिक और धार्मिक मामलों में अपर्याप्त मार्गदर्शक है, क्योंकि इसका *ज्ञान* सीमित है। विवेक व्यक्ति को बताता है कि सही और गलत में अन्तर है, परन्तु किसी के विवेक को सही या गलत का पता लगना, इस पर निर्भर करता है कि उसे क्या सिखाया गया है। कई लोग मूर्तियों की पूजा या बहुपत्नी या बहुपति को सही मानते हैं, परन्तु उनके विवेक को कोई परेशानी नहीं है क्योंकि उन्हें ऐसा ही सिखाया गया है।

पीछे मैंने विवेक की तुलना न्यायाधीश, गवाह, न्याय मण्डल और जल्लाद सब को एक बनाकर की थी। न्यायाधीश, गवाह, न्याय मण्डल या जल्लाद का काम कानून बनाना नहीं है, बल्कि उनका उद्देश्य कानून को लागू करना होता है। इसी प्रकार विवेक न्यायपालिका और कार्यकारी संगठन है, न कि विधानपालिका। यह केवल इसे दिए हुए आत्मिक और नैतिक नियमों को लागू कर सकता है। कहते हैं कि ''विवेक सुरक्षित मार्ग दर्शक उतना ही है, जितना इसे सुरक्षित मार्गदर्शन मिलता है'' यानी परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं से सुरक्षित अगुआई पाया हुआ विवेक।

निष्कलंक विवेक बनाए रखना

राज्यपाल फैलिक्स के सामने अपनी सफाई में पौलुस ने कहा, ''मैं ... यत्न करता हूं, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे'' (प्रेरितों 24:16)। अनुवादित शब्द ''मैं ... यत्न करता हूं'' का यूनानी शब्द यूनानियों द्वारा मुकाबले के लिए तैयार करने हेतु धावकों द्वारा किए जाने वाले कठोर प्रशिक्षण के लिए किया जाता था। मूलत: पौलुस कह रहा था, ''मैं निर्दोष विवेक रखने के लिए *स्वयं अभ्यास करता हूं*।''[18] गम्भीर धावक की रौंगटें खड़े कर देने वाली समयसारिणी, घण्टों के अभ्यास और थका देने वाले प्रशिक्षण पर विचार करें। पौलुस ने ''विवेक सदा निर्दोष रखने'' के लिए *ऐसे* ही प्रयास किए। आपके विवेक को व्यवस्थित ढंग से कार्य करते रहने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं।

- परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने में गम्भीर हों।
- पाप पर गम्भीर हों (सीखें क्या सही है और क्या गलत)।
- पाप के विषय में जो कुछ बाइबल कहती है, उसे *मानने* के लिए गम्भीर हों। अपने विवेक की सुनने के लिए गम्भीर हों।
- अपने विवेक द्वारा यह बताने पर कि आपने गलती की है, मामलों को सुलझाने के लिए गम्भीर हों।
- सबसे बढ़कर, ''शुद्ध विवेक'' रखने के लिए गम्भीर हों। जब आपका विवेक कहता है कि आपने गलती की है तो अपने पाप से मन फिराएं और उसे धोने के लिए प्रभु के पास जाएं (देखें इब्रानियों 9:14; 10:22)।

हर किसी को आवश्यकता है

एक प्रश्न

हमें रोमियों 2:14, 15 से जुड़ा एक और मामला देखना है। जब मैं लड़का था, तो मैं बूढ़े लोगों से पूछता था, ''दूसरे देशों के उन लोगों का क्या होगा, जिन्होंने कभी सुसमाचार सुना ही नहीं है? क्या उनका नाश हो जाएगा चाहे उन्हें यीशु के बारे में जानने का अवसर ही न मिला हो?'' कई बार यह भावना व्यक्त की जाती है: ''बेशक, यदि जितना उन्हें पता है उसमें बने रहने की कोशिश करें तो परमेश्वर उन्हें बचा लेगा!'' कई बार रोमियों 2:14, 15 का इस्तेमाल उस निष्कर्ष

के समर्थन के लिए किया जाता। इस प्रकार के व्यवहार से कइयों ने इस बात की चिन्ता करनी छोड़ दी कि दूसरे देशों में मिशन कार्य किया जाए या न।

आप और मैं ''परमेश्वर के साथ खेलने'' का साहस नहीं कर सकते, क्योंकि कौन बचाया जाएगा और कौन नहीं इसका फैसला हम नहीं, बल्कि परमेश्वर करेगा। अन्य सब मामलों की तरह इस मामले में भी हम जानते हैं कि सारी पृथ्वी का न्याय करने वाला सही ही करेगा (देखें उत्पत्ति 18:25)। इसके साथ ही हम यह चर्चा अवश्य कर सकते हैं कि रोमियों 2:14, 15 यह सिखाता है कि लोग ''जितना जानते हैं उसमें बने रहने की कोशिश करके'' सुसमाचार के बिना बचाए जा सकते हैं या नहीं। मैं नहीं मानता कि इस वचन में यह शिक्षा है। इस निष्कर्ष के लिए मैं निम्न कारण बताता हूं।

पुराने नियम की परिस्थिति, नये नियम का प्रबन्ध नहीं

पहली बात तो यह कि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच पौलुस के अन्तर की पृष्ठभूमि नये नियम का प्रबन्ध न होकर पुराने नियम की परिस्थिति है। डग्लस मू ने कहा है कि 1:18-3:20 में पौलुस ने ''मसीह से पहले के काल का समय'' बताया है।[19] मसीह के आने से पहले परमेश्वर अन्यजातियों के साथ (जिनके पास लिखित व्यवस्था नहीं थी) यहूदियों (जिनके पास लिखित व्यवस्था थी) से अलग तरह से व्यवहार करता था। परन्तु यीशु ने ...

> ... दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार [व्यवस्था] को जो बीच में थी, ढहा दिया। ... कि दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह [अर्थात कलीसिया; इफिसियों 1:22, 23] बनाकर परमेश्वर से मिलाए (इफिसयों 2:14-16)।

अब प्रभु में ''न कोई यहूदी रहा और न यूनानी [अन्यजाति],'' क्योंकि ''मसीह यीशु में सब एक'' हैं (गलातियों 3:28)। यह शिक्षा देना कि आज कुछ लोगों का उद्धार एक आधार (यीशु में विश्वास करने से) जबकि दूसरों का उद्धार दूसरे आधार (अपनी पूरी कोशिश करके) होता है। नये नियम की ''एक विश्वास [की शिक्षा]'' के उलट होगा (इफिसियों 4:1-6)।

उद्धार नहीं, न्याय

रोमियों 2:14, 15 (और इसके संदर्भ) में दूसरी (और अधिक महत्वपूर्ण) बात यह है कि ''पौलुस उद्धार के विषय में नहीं, बल्कि न्याय के विषय में लिख रहा था।''[20] वह यह सिद्ध नहीं कर रहा था कि कुछ लोग उस प्रकाश के अनुसार जी रहे थे, जो उन्हें मिला था, इसलिए उनका उद्धार हो जाएगा। इसके विपरीत वह यह ज़ोर दे रहा था कि कोई भी उस सच्चाई के अनुसार जीवन नहीं बिता रहा था जो उसे मिली थी, जिस कारण सबका *नाश* होना था (देखें आयत 12)। रिचर्ड बेटी ने लिखा है:

> पौलुस उन मूर्तिपूजकों के लिए कोई आशा नहीं देता, जो सुसमाचार से अलग अपनी पूरी कोशिश करने में संजीदा और विवेकी हैं। यदि पौलुस को मूर्तिपूजक के गम्भीरतापूर्वक

> परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने पर विचार करना था तो यह उसके मिशनरी जोश को कम कर देता।[21]

पौलुस यह पुष्टि कर रहा था कि यहूदी हों या अन्यजाति बिना मसीह के सारी मनुष्यजाति खोई हुई है। एक साधारण गलती यह है कि लोग खोए हुए हैं *क्योंकि वे सुसमाचार को ठुकराते हैं*। नहीं, नहीं, नहीं। लोग खोए हुए हैं, *क्योंकि वे पापी हैं*। इस बात पर क्रिस बुलर्ड सिखाते हुए एक आदमी के बारे में बताता है, जिसे ज़हरीले सांप द्वारा काटा गया था।[22] लोग जल्दी से उसे डॉक्टर के पास ले गए ताकि उसे ज़हर को काटने वाला टीका (antivenin) लगाया जा सके।[23] वे समय पर डॉक्टर के पास नहीं पहुंच सके और वह आदमी मर गया। भाई बुलर्ड पूछते हैं, ''क्या वह व्यक्ति इसलिए मरा कि उसे सीरम नहीं मिला?'' इसका स्वाभाविक उत्तर हां ही है। फिर वह उत्तर देते हैं, ''नहीं, वह इसलिए मरा *क्योंकि उसे ज़हरीले सांप ने काटा था*!'' इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खोया हुआ है तो वह अपने ही पाप के कारण खोया हुआ है।

यीशु पृथ्वी पर लोगों को सुसमाचार देने के लिए नहीं आया कि वे इसे मान सकें या इसे ठुकरा सकें और फिर बचाए जाएं या नाश हों। नहीं, वह इसलिए आया, क्योंकि मनुष्यजाति *पहले ही खोई हुई* थी (लूका 19:10) और बिना आशा के थी (इफिसियों 2:12) जब तक क्रूस पर उसकी मृत्यु नहीं हुई! जे. डी. थॉमस ने आज कुछ लोगों के सुसमाचार सुने बिना उद्धार पाने पर टिप्पणी की है:

> इस विचार पर, ... सम्पूर्ण जगत को बचाने का सबसे अच्छा ढंग यह होगा कि हर किसी को अज्ञानता में बढ़ने दिया जाए। बाइबल को जला दें और कोई सुसमाचार के संदेश की बात न करे और फिर सारी मनुष्यजाति अज्ञानता के द्वारा बचाई जाएगी! बेशक यह reductio ad absurdum [बेतुका बनाना] है, परन्तु यह तर्कसंगत है।[24]

मैं बाइबल की इस शिक्षा पर अत्यधिक बल नहीं दे सकता कि किसी को सुसमाचार सुनने का अवसर मिले या न मिले, बिना मसीह के वह अपने पाप में खोया हुआ है (इफिसियों 2:1)! मैंने इस भाग को ''हर किसी को आवश्यकता है'' नाम दिया है। वह आवश्यकता मसीह के सुसमाचार की है! फिर मैं कहता हूं कि न्याय केवल परमेश्वर के हाथ में है यानी वही अन्तिम न्याय करेगा कि कौन बचाया जाए और कौन नाश हो। इसके साथ ही जहां तक वचन बताता है, यदि किसी ने सुसमाचार को सुनकर उसकी आज्ञा नहीं मानी है तो हमें उसके बचाए होने की स्थिति में होने पर विचार करने का कोई अधिकार नहीं है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:8; 1 पतरस 4:17)। इसलिए खोए हुए और मर रहे संसार में सुसमाचार न ले जाने के बहाने ढूंढ़ने के बजाय हमें हर जगह सब लोगों को यीशु की कहानी बताने के तरीके ढूंढ़ने चाहिए!

सारांश

किसी पर ''आरोप लगाने या उसका बचाव करने'' के विचारों का अध्ययन करते हुए (रोमियों 2:15), आपको समझ आ गया होगा कि पौलुस के कहने का क्या अर्थ था। बेशक आपने

अपने विवेक की पुकार को कि ''दोषी! दोषी सुना'' होगा! इसमें कुछ भी गलत नहीं है। इससे यह पता चलता है कि विवेक सही काम कर रहा है। परन्तु जब दोष आपके मन में भरा हो तो आपको क्या करना चाहिए?

दोष को उत्तर देने का बाइबल का ढंग यह है कि यीशु के लहू के द्वारा इससे हमेशा के लिए छुटकारा पाया जाए। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए एक लेखक ने लिखा है, ''तो मसीह का लहू ... तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो?'' (इब्रानियों 9:14)। हमारे विवेक यीशु के लहू के द्वारा उस समय धोए जाते हैं जब हम ''विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप'' (इब्रानियों 10:22) जाते हैं। अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि ''शुद्ध जल से'' देह का धोया जाना बपतिस्मे के सम्बन्ध में है। पतरस ने बपतिस्मे को ''शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में'' हो जाने (1 पतरस 3:21) के रूप में बताते हुए विवेक के शुद्ध होने और आज्ञाकारिता से भरोसा करने को मिला दिया।

यदि आपने शुद्ध विवेक की आशीष को जानना है तो फिर यीशु के बलिदान में भरोसा रखते हुए आज ही अपना जीवन उसे दे दें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ को समाप्त करते हुए मैंने उन पर ध्यान दिया, जिन्होंने अभी बपतिस्मा नहीं लिया है। आप मसीह लोगों का ध्यान आत्मिक आवश्यकताओं की ओर दिला सकते हैं। कई मसीह लोग भी दोषी विवेक से पीड़ित हैं। कई तो इसलिए क्योंकि वे मन फिराने को तैयार नहीं हैं और कई इसलिए क्योंकि उन्हें परमेश्वर की अद्‌भुत क्षमा की समझ ही नहीं आई है। यीशु का लहू हमारे पापों को धोता रहता है यदि हम प्रकाश में चलने के लिए तैयार हों (1 यूहन्ना 1:7; आयत 9)।

टिप्पणियां

[1]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 14-16 द्वारा यह ढंग अपनाया गया था। [2]सी. के. बैरेट, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स* (लंदन: पृष्ठ नहीं, 1957); लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 125 में उद्धृत। [3]यूनानी में कोई कोष्ठक नहीं है। [4]*दि जौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* संपा., मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 180-181 में स्टीवन बरबास, ''Conscience.'' [5]यूनानी धर्मशास्त्र में पहले ''Law'' से पूर्व कोई निश्चित उप पद नहीं है, पर अगले ''Law'' से पहले है। संदर्भ संकेत देता है कि दोनों मूसा की व्यवस्था के लिए हैं। [6]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 660. [7]शब्दों में समानता होने के कारण कई लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि रोमियों 2:14, 15, यिर्मयाह 31:31-34 में दी गई प्रभु की प्रतिज्ञा का पूरा होना है। कुछ शब्दावली वही है, पर लिखते समय पौलुस के मन में पुरानी वाचा (नियम) के काल के समय की अन्यजातियों की ''स्वाभाविक'' व्यवस्था थी, जबकि यिर्मयाह के वचन में मसीही लोगों पर प्रकट की गई ''नई वाचा'' अर्थात यीशु

मसीह का नया नियम था (देखें इब्रानियों 8:7-13)।[8] *दि एनेलिटिकल ग्रीक लेक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 213. [9]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, *जूनि., वाइन'स कम्पलीट एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 122. [10]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* दूसरा संस्करण विलियम एफ. अर्ंट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 794.

[11]प्रेंटिस मिएडर, जूनि., प्रेस्टोंक्रेस्ट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, डालेस, टैक्सस तिथि नहीं, कैसेट में दिया गया अनाम प्रवचन। [12]मौरिस, 128. [13]एलफ्रेड टैनीसन, ''सी ड्रीम्स,'' *द वर्क ऑफ़ टैनिसन,* सं. हालम टैनिसन (न्यू यॉर्क: मैक्मिलन कं., 1923), 155. टैनिसन (1809-1892) अपने समय का एक प्रसिद्ध कवि था। [14]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन एण्ड नील विलसन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 51 में उद्धृत। [15]इस उदाहरण के लिए यह विचार मुझे थॉमस, 14-15 से मिला। [16]वही, 14. [17]रोमियों 14 और 15 में ''विवेक'' शब्द नहीं मिलता, जो कुछ पौलुस ने कहा उसका सार इसी अवधारणा को दिखाता है (देखें 14:14, 23)। [18]*दि इंटरलियनर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: द नेसले ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एलफ्रेड मार्शल* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 580. [19]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशंग हाउस, 2000), 126. [20]जॉन आर. स्टॉट, दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड, दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइ: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 86.

[21]रिचर्ड ए. बेटी दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स, दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 38. [22]क्रिस बुलर्ड, ''ए यूनिवर्स इन रिवर्स'' ओवरलैंड पार्क चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओवरलैंड केनसस, 10 फरवरी 1991, कैसट को दिया गया संदेश। [23][24]''Antivenin'' का अर्थ है ''ज़हर विरोधी।'' [24]थॉमस, 15.

यहूदी व्यवस्था	सम्बन्ध	अन्यजाति ''व्यवस्था''
औपचारिक नियम बलिदान आराधना	परमेश्वर से	पुरखाओं की परम्पराएं बलिदान
नैतिक नियम कानूनी नियम	अन्यों से	नैतिक नियम सही और गलत की समझ
व्यक्तिगत पाबंदियां विवेक	अपने आप से	व्यक्तिगत पाबंदियां विवेक